

राष्ट्रीय

राजदूत



कानपुर ● सोमवार ● 21 नवम्बर ● 2022

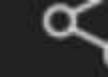
'बरसीम चारा की पाचकता व पौधिकता बढ़ायें किसान'



इसमें देखें की याद करने और पौधिक की अवृद्धि महज 20 से 22 प्रतिशत होती है। इसमें देखें की पाचकता भी 70 से 75 प्रतिशत होती है। इसके अधिकांश हममें कैरियराम और यॉनियोग्राम भी काफी महज में देखें जाते हैं। इसके बारे में लोकल योगों को अलग से लोकोन्करण अधिक देने की आवश्यकता बहुत पड़ती है।

कानपुर (एकाएनर्स)। बांदेश्वर अवास बूथ पर द्वारा दिए गए विवरोंमें बांदेश्वर के बून्होंकी ही दृष्टिकोण देखा जाता है। इसके अन्त में आज दैरी एवं चारों विभागों विभाग के द्वारा देखी गई बांदेश्वर की याद करना भी बहुत ज्ञान भरा है। इसके अन्त में देखी गई बांदेश्वर की याद करना भी बहुत ज्ञान भरा है।

इसमें देखें की याद करने और पौधिक की अवृद्धि महज 20 से 22 प्रतिशत होती है। इसमें देखें की पाचकता भी 70 से 75 प्रतिशत होती है। इसके अधिकांश हममें कैरियराम और यॉनियोग्राम भी काफी महज में देखें जाते हैं। इसके बारे में लोकल योगों को अलग से लोकोन्करण अधिक देने की आवश्यकता बहुत पड़ती है।



देश-विदेश

लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी यैनिक

उत्तर प्रदेश

आसियान देशों के रक्षा मंत्रियों की बैठक... 12

बाबा विश्वनाथ और माता अन्नपूर्णा के दरबार में... 10



लाल्हालक

लाइन: 14 | अंक: 41

कृत्ति: ₹3.00/-

पैज़ : 12

लोगोपाठ | 21 अक्टूबर, 2022

जन एक्सप्रेस

janexpressnews

janexpresslive

janexpresslive

www.janexpresslive.com/epaper

बरसीम के गुणों के बारे में दी जानकारी

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.डी.आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में रविवार को डेरी एवं पशुपालन विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. पी.के. उपाध्याय ने किसानों के लिए



एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया कि बरसीम सर्दी के मौसम में पौष्टिक चारे का एक उत्तम स्रोत है। इसमें रेशे की मात्रा कम और प्रोटीन की औसत मात्रा 20 से 22 प्रतिशत होती है तथा इसकी पाचनशीलता 70 से 75 प्रतिशत होती है। उन्होंने बताया कि इसमें पाए जाने वाले कैलिश्यम और फॉस्फोरस के कारण दुधारू पशुओं को अलग से खली-दाना आदि देने की आवश्यकता कम पड़ती है। उन्होंने कहा कि बरसीम की उपलब्धता अधिक होने के कारण किसान पशु को ज्यादा खिला देते हैं जिसके कारण पशुओं में अफारा रोग हो जाता है। इसलिए किसान बरसीम को सूखे चारे के साथ मिलाकर खिलाएँ या पहले सूखा चारा फिर बरसीम खिलाएँ। उन्होंने बताया कि बरसीम की बुआई के समय इसके बीज के साथ जई और गोभी, सरसों के बीज मिलाकर बोने पर अधिक मात्रा में हरा चारा प्राप्त होता है जिससे पशु को अफारा रोग की समस्या से बचाया जा सकता है।

WORLD खबर एक्सप्रेस

बरसीम चारा की पाचकता एवं पौधिकता बढ़ायें किसान, स्वरथ रहेंगे पशुः डॉ. पी के उपाध्याय



काशीपुर। चंदोलन आलाद जूधि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय काशीपुर के कुलाचीत डॉक्टर डॉ. पी. अर. सिंह द्वारा जारी मिट्टी के छान में जाज जैरी एवं प्रभुचालन विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. पी.के. उपाध्याय ने विज्ञान भाइयो को एडवाइजरी जारी करते हुए चालाया कि बरसीम सारी के बीमम में पौधिक चारे का एक उत्तम स्वीकृत है। इसमें रेहे की भाजा कम और प्रोटीन की अवैमत भाजा 20 से 22 प्रतिशत होती है। इसके चारे की पाचनशक्ति 70 से 75 प्रतिशत होती है। इसके अधिकारी इसमें कैरियम और पर्फेस्प्रेस भी चालाये भाजा में पाये जाते हैं, जिसके चालायण दुष्कर प्रभुओं को अलग से खानी-दाना अदि देने की अनुचितता कम पढ़ती है। उन्होंने चालाया कि ग्राम यह देखा गया है कि प्रथम कटाई के दौरान कम उपज मिलती है,



परन्तु दूसरी और तीसरी कटाई के समय मालसे अधिक उपज मिलती है। विज्ञान भाई बरसीम उपलब्धता के कारण पशुओं को अधिक विताया देते हैं और जुहासाग उड़ते हैं। बरसीम अधिक लहने से पहुँची भी अलग रोग ही जात है। इससिए मूर्खी चारे के स्वास्थ गिराकर बिलाई या पहले सूखा भाजा फिर बरसीम

बिलाई या बरसीम चारे गुआइ के समय ही यदि इसके चौबी के मात्र जई और गोधी, मरमो के चौबी मिलाकर चोपा जाय तो इससे व बोकल अधिक भाजा ने हारा चारा प्राप्त होग। अल्ला पशु को उपजा देने की समस्या से छुटकारा भी मिलेगा और चारे की गोदिकता, चाचकता भी बहु जाएगी।



बरसीम चारा की पाचकता एवं पौष्टिकता बढ़ायें किसान, स्वस्थ रहेंगे परं.. डॉ पीके उपाध्याय



दि ग्राम टुडे, संवाददाता।
(सतेंद्र कुमार) चंद्रशेखर
आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी
विश्वविद्यालय कानपुर के
कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह
द्वारा जारी निर्देश के क्रम में
आज डेरी एवं पशुपालन
विज्ञान विभाग के प्रोफेसर
डॉ पीके उपाध्याय ने किसान
भाइयों को एडवाइजरी जारी
करते हुए बताया कि बरसीम
सर्दी के मौसम में पौष्टिक

चारे का एक उत्तम स्त्रोत है। इसमें रेशे की मात्रा कम और प्रोटीन की औसत मात्रा 20 से 22 प्रतिशत होती है। इसके चारे की पाचनशीलता 70 से 75 प्रतिशत होती है। इसके अतिरिक्त इसमें कैल्शियम और फॉस्फोरस भी काफी मात्रा में पाये जाते हैं, जिसके कारण दुधारू पशुओं को अलग से खली-दाना

आदि देने की आवश्यकता कम पड़ती है। उन्होंने बताया कि प्रायः यह देखा गया है कि प्रथम कटाई के दौरान कम उपज मिलती है, परन्तु दूसरी और तीसरी कटाई के समय सबसे अधिक उपज मिलती है स किसान भाई बरसीम उपलब्धता के कारण पशुओं को अधिक खिला देते हैं और नुकसान उठाते हैं द्य बरसीम अधिक खाने से पशुओं में अफारा रोग हो जाता है। इसलिए सूखे चारे के साथ मिलाकर खिलाएँ या पहले सूखा चारा फिर बरसीम खिलाएँ स बरसीम की बुआई के समय ही यदि इसके बीज के साथ जई और गोभी, सरसो के बीज मिलाकर बोया जाय तो इससे न केवल अधिक मात्रा में हरा चारा प्राप्त होगा। बल्कि पशु को अफारा रोग की समस्या से छुटकारा भी मिलेगा और चारे की पौष्टिकता, पाचकता भी बढ़ जाएगी।



18

कानपुर, संप्रियोग 20 नवंबर 2022

कानपुर न्यूज़

www.dinartimes.in

DGT दीनार टाइम्स

दिनार कानपुर में बैंक एड्स कानपुर चालाकदार ऐनी

बरसीम चारा की पाचकता एवं पौष्टिकता बढ़ायें किसान, खरथ रहेंगे पशु

डीटीएनएन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रीलोगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डॉ. आर. सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज हेतु एवं पशुपालन विभाग के प्रोफेसर डॉ. पीके उपाध्याय ने किसान भाष्यों को एव्हाइजरी जारी करते हुए बताया कि बरसीम सर्दी के मौसम में पौष्टिक चारे का एक उत्तम स्तरोत है। हस्तों रेशों की मात्रा कम और प्रोटीन की ओरात मात्रा 20 से 22 प्रतिशत होती है। हस्तके चारे की पाचनशीलता 70 से 75 प्रतिशत होती है। हस्तके अंतिरिक्ष हस्तमें कैलिश्यम और फॉट्योट्रस भी कापी मात्रा में पाये जाते हैं, जिसके कारण दुधारु पशुओं को अलग से अली-दाना आदि देने की आवश्यकता कम पड़ती है। उन्होंने बताया कि प्रायः यह देखा जाया है कि प्रथम कटाई के दो दिन कम उपज मिलती है, परन्तु दूसरी और तीसरी कटाई के समय स्थानसे अधिक उपज मिलती है एवं फिलान आई बट्टीम उपलब्धता के कारण पशुओं को अधिक छिला देते हैं और जुकसाम उठाते हैं 7 बट्टीम



अधिक खाने से पशुओं में अफारा रोग हो जाता है। हस्तलिए सूखे चारे के साथ मिलाकर छिलाएँ द्या पहले सूखा चारा फिर बरसीम छिलाएँ द्या बरसीम की दुआई के समय ही यदि हस्तके बीज के साथ जहू और जोभी, शरसो के बीज मिलाकर दोया जाय तो हस्तरो ल केवल अधिक मात्रा में हरा चारा प्राप्त होता। बहिक पशु को अफारा रोग की समस्या से छुटकारा भी मिलेगा और चारे की पौष्टिकता, पाचकता भी बढ़ जाएगी।



अमर उजाला कानपुर 21/11/2022

सूखे चारे के साथ खिलाएं बरसीम

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के डेयरी एवं पशुपालन विज्ञान विभाग के डॉ. पीके उपाध्याय ने दुधारू पशुओं के लिए बरसीम को बेहतर चारा बताते हुए एडवाइजरी जारी की है। बताया कि बरसीम में रेशे की मात्रा कम और प्रोटीन की औसत मात्रा 20 से 22 प्रतिशत होती है। इसके चारे की पाचनशीलता 70 से 75 प्रतिशत होती है। इसमें कैल्शियम और फॉस्फोरस भी काफी मात्रा में पाए जाते हैं। दुधारू पशुओं को खली-दाना की आवश्यकता कम पड़ती है। बरसीम अधिक खाने से पशुओं में अफारा रोग हो जाता है। इसलिए पहले सूखा चारा फिर बरसीम खिलाएं। इससे पशु रोगों से दूर रहेंगे और दूध अधिक देंगे। (संवाद)

बरसीम चारे की पौष्टिकता बढ़ायें किसान, स्वस्थ रहेंगे पशु

□ चारे में कैलिशायम और फारफोरस की माला रहती है अधिक



प्रो. डॉ. पीके उपाध्याय

कानपुर, 20 नवम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विभागिकालय कानपुर के कुलपति डॉ. डी.आर. सिंह की ओर से निर्देश के क्रम में आज डॉ. एवं पशुपालन विज्ञान विभाग के प्रो. डॉ. पीके उपाध्याय ने किसान भाइयों को एडवाइजरी जारी करते



हुए बताया कि बरसीम सदी के मौसम में पौष्टिक चारे का एक उत्तम स्रोत है। इसमें रेशे की मात्रा कम और प्रोटीन की औसत मात्रा 20 से 22 प्रतिशत होती है। इसके चारे की पाचनशीलता 70 से 75 प्रतिशत होती है। इसके अतिरिक्त इसमें वैश्विक और फॉर्मफोर्म भी काफी मात्रा में पाये जाते हैं,

जिसके कारण दुधारु पशुओं को अलग से खली-दाना आदि देने की आवश्यकता कम पड़ती है। उन्होंने बताया कि प्रायः यह देखा गया है कि प्रथम कटाई के दौरान कम उपज मिलती है, परन्तु दूसरी और तीसरी कटाई के समय सबसे अधिक उपज मिलती है द्य किसान भाई बरसीम उपलब्धता के कारण पशुओं को अधिक खिला देते हैं और नुकसान ठिकते हैं। बरसीम अधिक खाने से पशुओं में अफारा रोग हो जाता है। इसलिए सुखे चारे के साथ मिलाकर खिलाएं या पहले सूखा चारा फिर

बरसीम खिलाएं। बरसीम की बुआई के समय ही यदि इसके बीज के साथ जाई और गोभी, सरसों के बीज मिलाकर बोया जाय तो इससे न केवल अधिक मात्रा में हरा चारा प्राप्त होगा। वैश्विक पशु को अफारा रोग की समस्या से छुटकारा भी मिलेगा और चारे की पौष्टिकता, पाचनशीलता भी बढ़ जाएगी।